

पद (सूरक्षा)

प्र०-१ → गोपियों द्वारा उद्धव के भाग्यवान कहने में शाम
उत्तर → गोपियों उद्धव पर वंश करती हैं कि कृष्णी
के किंतु तुम्हारे भाग्य की अपेक्षा इसके लिए कृष्ण के
निकट रहते हुए कभी भी तुम प्रेम से बचते रहो।
श्री कृष्ण के निकट रहकर भी उनके द्वारा
अनुराग (प्रेम) नहीं हुआ, वह तुम जैसा ही हो
भाग्यवान हो सकता है। इस तरह गोपियों उनका
भाग्यवान कहकर पढ़ी वंश करती हैं कि
तुमसे बहकर उमरिप ३०५२ किसाका हो सकता
है।

प्र०-२ → उद्धव के व्यवहार की तुलना किस-किस से
की गई है?

उत्तर → उद्धव के व्यवहार की तुलना पहली तुलना में
कमल पत्र की गई है जो पानी में रहते हुए
भी उससे आघृत रहते हैं।
दूसरी तुलना तेल से पुकत छड़े से की गई
है जो जल में डूबने पर पानी से नहीं
भीगती, ठीक उसी प्रकार उद्धव व्यवहार में
इतना कठा है कि उस पर कृष्ण का वै-
संस्कृत का कोई प्रभाव नहीं पड़ता।
तीसरा



प्र०३→ गांधियों ने कौन - कौन से उदाहरणों के माध्यम से उदयन को उत्तराधिकार दिया है?

उत्तर→ ① हम गांधियां श्री कृष्ण की तरह उस कमल - पत्र आरे तेल की मटकी की तरह नहीं हैं जो श्री कृष्ण के पास रहकर श्री उनके पैर से अद्वितीय है।

② हम श्री कृष्ण निष्ठुर नहीं हैं जो समीप बहुती हुई जल नदी के जल का स्पर्श भी ना करे।

③ श्री कृष्ण योग के संदेश द्वारा हम गांधियों के लिए उपयुक्त नहीं हैं।

④ हमने कृष्ण को सन, वचन आरे कर्म से हीरिल की लकड़ी की तरह बजकड़ रखा है।

⑤ हम योग - संदेश के कड़वी करकड़ी के समान तथा बिमारी के समान प्रतीत हो रहा है।

प्र०४→ उदयन द्वारा दिया गया संदेशों ने गांधियों के विद्युत - अग्नि में ची का काम करने किया?

उत्तर→ गांधियों श्री कृष्ण के संचुरात्म चले जाने पर, उनसे उपर्युक्त चीजों की छोड़ आवश्यक प्रक्रिया कर दानों के करण विद्युत - अग्नि में दाढ़ा से ही उदयन द्वारा दियी गयी थी, उन्हें उदयन द्वारा श्री कृष्ण लौटकर उत्तरांगी, निंदा व विद्युत आये। जब कृष्ण का योग संदेश उदयन के द्वारा गांधियों को दिया गया तो उनकी विद्युत - अग्नि और तीव्र हो गई। इस तरह योग - संदेश के विद्युत - अग्नि में उदयन का काम किया।

प्र०-11 गोपियाँ ने अपनी वाक्यात्मक के आधार पर जानी उद्घव को परास्त कर दिया, उनके वाक्यात्मक की विशेषताएँ लिखें?

उल्लेख-11 उद्घव जैसे जानी को गोपियों के विवरण को कम प्रहुता उच्च रछे के लिए विवरण कर देती है और वे गोपियों के वाक्यात्मक प्रभावित हुए बिना नहीं रहते। उनके वाक्यात्मक में विशेषताएँ निम्नलिखित हैं-

- ① स्पष्टता → गोपियों अपनी बात को बिना के सी लोग-लोटके स्पष्ट कर देती है। उद्घव के द्वारा लोटके गरज यार संदेश को बिना संकेत के कड़वी कड़वी बता देती है।
- ② व्यंग्यात्मकता → गोपियों व्यंग्य करने में प्रवीन है। उनकी मानवीनता को मानवान करकर व्यंग्य करती है कि उन्हें कृष्ण विमर्श बढ़ाकर कैन मानवान दौड़ा जो कृष्ण के समीप करकर उनके अनुराग गम से वंचित रहे।
- ③ सहृदयता → उनकी सहृदयता उनकी बातों से स्पष्ट इतनी है। वे कितनी मात्रक हैं। इसका जान तब होता है जब वे गई-गई होकर कहती हैं कि हम अपनी धैर्य-मात्रा का कृष्ण के समझ में ही नहीं रहा। इस तरह वाक्यात्मक अनुपम था। उनका

- प्र०-12 विमर्श पदों को व्याजन रखने हुए सूर के भ्रमणीत की मुख्य विशेषताएँ बताइए?
- सूरदास जी का भ्रमणीत, मदा काम्प निम्नलिखित विशेषताओं के आधार पर विशेष हैं-
- ④ सूरदास जी के भ्रमणीत ने विमर्श निर्माण में का विशेष और अक्ष संग्रह वहम की सराहना है।

- ② विद्युत धूंगार का आर्थिक चिन्ह है।
 ③ गोपियों की स्मृति, वाक्यपुत्रा, सहदेश,
 व्यंग्यात्मकता, सर्वशः सराहनीय है।
 ④ अश्वनिष्ठ प्रेम का विषय दर्शन है।
 ⑤ गोपियों का वाक्यात्मक उद्घाव को सौन कर
 देता है।
 ⑥ आदर्श प्रेम की पराकारा अस्तीति और
 धोग का पलायन है।
 ⑦ स्त्रीइसिकृत (प्रेम से इबू हुरै) उपालंभ अनुठा
 है।

रचना और आधिकारिकता

प्रक्रिया

प्र०-१३- गोपियों ने उद्घाव के साथे तरह-तरह के तर्क दिखा है, आप अपनी कल्पना से और तर्क दीजिए?

उल्लङ्घन उद्घाव गोपियों को धोग-जान का उपदेश देने आए, परन्तु श्रीकृष्ण के प्रते गोपियों का असीम विश्व व वाक्यनिष्ठ भ्रम के आगे उनकी एक न चली गोपियों के तर्की के आगे उद्घाव निष्कर्ष हो गया। गोपियों धोग-जान को अपने बहाव देने वाले हुए उन्हें दूर का भवा लेता है।

त्रिन शाति के सामने असामाज है जबकि धोग-जान मूले के पत्तों के बासान है। श्रीकृष्ण

- ये मीक्ते द्रष्टा फल की तरह आनंद देने वाला है जबकि धोग-जान भीम के कड़वी निवारी की तरह कट्टदापक है। गोपियों ने उद्घाव से पहले भी बताया होगा कि उनके पास रहा ही पन छोड़ दा, वह भी श्रीकृष्ण के

साथ मधुरा चला गया है, उनके किसी जो से प्रोग-ज्ञान की उपायना करें।

प्र-14) उद्योग जानी और नीति की बात जानते हैं, गोपियों के पास भेजी कीन-भी शक्ति यही जो उनके वाक्यात्मक में सुधारित हो दी?

उत्तर-> उद्योग जानी थी, नीति की बात जानते थे, परन्तु उनके हृदय में गोपियों की तरह ~~शक्ति~~ शक्ति किसी के भी प्रते धूम-धावना नहीं थी। लोकों गोपियों की श्रीकृष्ण के प्रते आगाध क्षेत्री की शक्ति, उनके प्रते निष्ठा, विश्वास और पूर्ण समर्पण इब की वह शक्ति थी, जो उद्योग के सामने उनके वाक्यात्मक में सुधारित हो दी।

प्र-15) गोपियों ने यह कहा कहा के हीरे तब ~~वाले~~ राजनीति पढ़ दीज़? या उनके गोपियों के हृदय कथन का विचार ~~के~~ समाकालीन राजनीति में जाहर आता है; समष्टि कीजिए -

उत्तर-> जब श्रीकृष्ण इस में उठते थे तब वे बालों के साथ स्वेच्छिक मिलते थे औलते-हृदयते और मिल-सुखाने रहते थे। लोकों मधुरा जाने की बात श्रीकृष्ण। उनके ~~शक्ति~~ और ~~सूखेकरने~~ वे विश्व-विद्वानों की ओर में दृढ़ गोपियों में वीड़ो को शोत करने के लिए ०३४० अपने स्थान पर रुक्ख, नीरव धोग-ज्ञान के संदर्भ में साथ उद्योग के लिए कैंपटपूर्ण व्यवहार मरणप्रयत्न करते हुए गोपियों ने राजनीति के बहुती बहुती है। गोपियों के इस काम का विचार समाकालीन राजनीति में श्री दिव्यांगी है।

प्र०-
जब तक गोपियों को शाला पाने का स्वार्थ रहता है तब तक आम जनता के सामाजिक दृष्टिकोण
में आपके प्रकार के अधिकारीने देते हैं, लोकों जब के
शासन सिद्धांशु पर बैठते हैं तो के शाशी
बाद मूलकर भला सुन मोगने लगते हैं।

प्र०-५५-> 'मरजाहा न लही', के माध्यम से कानून-शी
सर्वदा न रहने की बात की जा रही है ?

उत्तर-> 'मरजाहा न लही', के माध्यम से श्री कृष्ण
द्वारा गोपियों के द्वेष की सर्वदा को नोड दिया
गया तथा गोपियों को घोग-जान के बोद्धा
को भेज दिया गया। उस कथन के माध्यम से
गोपियों के इसी धेष-मर्हिया न रहने की बात
की जा रही है।

प्र०-६-> कृष्ण के प्रति आपने आनन्द द्वेष का गालियां
ने किस प्रकार अभिव्यक्त किया है ?

उत्तर-> श्रीकृष्ण के प्रति आपने आनन्द द्वेष का
अभिव्यक्त करते हुए गोपियों कहते हैं कि जिस
द्वारित पक्षी अपने पूरों में एक लाडी साँव
पकड़ रहता है और उसी छकार हम भले भी
श्रीकृष्ण के द्वेष को पूरी हुवता व आँख
में दृढ़ रखा है। वे हृदय से श्रीकृष्ण की हो
चुकी हैं तथा लेन-दात, सौन-जागत भरों तक
के बे जलन में भी 'कानू-कानू', ही होती है।

उद्धरण द्वारा श्रीकृष्ण के घोग-जान का
मंदिर सुनाने पर वे हुए प्रकार तड़प ३०८
हैं जिसे केवल उन्हें श्री में दी डालकर
उसे प्रवहं लगावाओं का रूप दे दिया है।

गोपियों श्रीकृष्ण की किंच-वेदना में जल रही है।

प्र०-७ → गोपियों ने उद्धव से योग की शिक्षा करे लगातार को देने की बात कही है ?
 उत्तर → गोपियों ने उद्धव ने योग की शिक्षा करे लगातार को देने की बात है जिनका मन अस्थिर या चंचल है और चक्री की माँती घूमता है।

प्र०-८ → प्रसुत ~~पद~~ के आधार पर गोपियों की योग - ज्ञाना के प्रति इष्टिकाल स्पष्ट करे।
 उत्तर → गोपियों योग - ज्ञाना को शुष्क रखने विरसा मानती हैं। योग - ज्ञान का मार्ग आग की तरह जलावे गला रखने अत्यन्त कष्टदायक है। योग - ज्ञान को उमनाने की बात सुनते ही उनकी विरह - बदना की ऊँगी और उद्धिक पद जाती है, योग - ज्ञान ~~पद~~ की बात गोपियों ने कही कही कही की शोषित गहण करने योग लगती है और उन्हें एक ऐसे रोग की तरह लगता है जिसे उद्दान पहले कभी न देखा - सुना है और न दी कभी मारा किया है।

प्र०-९ → गोपियों के उद्दान राजा का धर्म क्या होता ही चोहरा ?
 उत्तर → गोपियों के उद्दान राजा का धर्म दौना चोहरा की बड़े अपनी भजा के देते ही रहा करे और उस पर केसी मकार का लड़ अत्याचार व अपाच न करे। बड़े केसी भी तरह अपनी मकार को न मतार।

प्र०-१० → गायियों के कृष्ण के लिए वह परिवर्तन
दिखाई देता है जिसके कारण वे अपना मन
वास्तव पा लेने की बात कहती है ?

उत्तर → गायियों के अनुसार श्रीकृष्ण → राजनीति - शास्त्र
पढ़ ली है और वे बदल गए हैं। इसलिए वे
पहले से भी उचित बोधमान - और चरू ही गए
हैं। उन्होंने हम सब गायियों को घोन - घोन
के कारण मार्ग पर चलने का संदेश भेजा है।
जब वे आ-डेट (गायियों के हेतु) की बात नहीं
सोचते, इसलिए गायियों की बेरह - बेदना को
शांत करने के लिए इनमें न आकर उसे पड़ना च
के लिए उद्देश्य को घोन - घोन के संदेश के
साथ भेज दिया। इन्हीं परिवर्तनों को देखकर
गायियों श्रीकृष्ण से अपना मन वास्तव
कही लेने की बात कहती है।

Made by.

Back Bencher



[https://we-are-](https://we-are-thebackbenchers.on.drv.tw/bencher.html)

[thebackbenchers.on.drv.tw/bencher.html](https://we-are-thebackbenchers.on.drv.tw/bencher.html)